



# अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
चौबीस तिपैकरी का स्तवन	१
चौबीसी लिख्यते	३
प्रभुजीसे घिनती	४
कमौकी लावली	६
श्री श्रीमंथर ग्यामीजीका स्तवन	८
गुरु उपदेशी	११
उपदेशी लावली लिख्यते	१२
साम गानिन हुतावदेश	१४
उपदेशी स्तवन	१६
उपदेशी पद	१८
उपदेशी गद्दक	१९
उपदेशी गद्दक	२०



विषय	पृष्ठ
कमलावतीकी लिज्झाय	७२
श्री सीताजीरी आलोचना	७८
अष्टा पुत्रकी स्तवन	८४
पंचमा आगकी स्तवन	८७
नवपाटीकी स्तवन	१००
हुन्पारे गणधरकी स्तवन	१०२
चौथीशी ( गोरल ईमरजी बेवेतो हंनकर पोलना है )	१०४
ऊधोजी कमनकी गत न्यारी	१०६
होगी	१०७
ये पनाना	१०८
धरा धर मरनाय	११३
जान नग हन	११६
नवपा	११८
त कानन हनन करे	१२१
त कानन नकारका	१२२



नाथु बंदना	१४३
पाया ज्ञायाय सिद्धाय	१४०
धोत पहरमानकी स्तवन	१४२
उपदेशी स्तवन	१४४
ध्रीजिन खोवीसी	१४५
करत नहीं बरु सोच	१४६
नय पद स्तवन	१४७
उपदेशी स्तवन	१४८
पाले पाई समझली रो स्तवन	१४०
पुन्य रूपि लालचन्द्रजी कृत पावनी	१४४
माष्टी	१५५







विविध रत्न स्तवन संग्रह

द्वितीय भाग

॥ अथ चोर्वीस तिर्थेकरोका स्तवन लिख्यते ॥



## ૧ વિવિધ રત્ન સ્તવન સંગ્રહ ।

રે લો ॥ ચૌ૦ ॥ ૪ ॥ જે નર જિનવરનાં ગુણ  
ગાવે, તે ગર્ભાવાસ ન આવે રે લો । મનરા  
મનોરથ સફલા થાવે, મુનિ રામચન્દ્ર હમ ગાવે  
રે લો ॥ ચૌ૦ ૫ ॥

॥ રતિ ધીવીમી સમાગમ્ ॥



॥ અથ પ્રમૂર્જામે વીનતી લિખ્યન્તે ॥

~\*~\*~

( નવ ઘાટાને ઉત્તરને આયો ન દેશી )

દાંજે પાર ઉતાર પ્રમૂર્જો, દીજે પાર ઉતાર;  
હુ અપાવન વાનન અધમ છું, તું છે દીન  
દયાન ॥ ન૦ ॥ કૃપા નિધિ તું છે દીન  
દયાન મા અધમજી પાર ઉતારો. તું છે પામ

कृपाल ॥ टेर ॥ तूं ईश्वर परमेश्वर तूं छै, तूंही  
 शंकर मुरारः ब्रह्मा विष्णु हिरण्यगर्भ तूं,  
 महादेव किरतार ॥ प्र० ॥ १ ॥ स्वयंभू अर्हत  
 गणेश, वीतराग तीर्थकार; कर्ता विश्वम्भर  
 जगके भर्ता, तूं हरि श्याम उदार ॥ प्र० ॥ २ ॥  
 तूं निरमोही निकर्मी निसंगी, नीरागी नीराकार;  
 पुरुषोत्तम निष्कलंक तूं ही छै, राम रहीम  
 निर्धार ॥ प्र० ॥ ३ ॥ तूं प्रभु तारक कर्म  
 विदारक, वारक तूं संसार; सुखके कर्ता हर्ता  
 दुखके, भर्ता त्रिलोकी सार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ तूं भग-  
 वंत सर्वज्ञ शिरोमणि, गुनको पारंपार; मुनि  
 राम कहै जिण पारस भेट्यो, किम रहै लोह  
 बिकार ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥ इति प्रभुजीसे वीनती समाप्तम् ॥



सोमल ब्राह्मण करो तुम चर्चा, दुधारा प्रश्न  
करायो; जिणनें मुक्ति इण भव दीधी, श्री  
पंचम अंग दिखायो ॥ ना० ॥ ५ ॥ अर्जुन  
माली पट मासां ताई, सात मनुष्य नित घायो  
जिणनें मुक्ति दीवी छिन भरमें, सकल ही पाप  
गमायो ॥ ना० ॥ ६ ॥ श्री वीर प्रभूसें अरज  
करत हूं, मुजनें किम विसरायो; नहीं अधि-  
काई काष्ट जल तारे, अधिकाई पाहण तरायो  
॥ ना० ॥ ७ ॥ तुम अपकार किया बहुतेरा  
सहुना काज सरायो; मुनि राम कहै मुज ता-  
रन विरियां, किम आलस दरसायो ॥ ना० ॥ ८ ॥

॥ इति कर्मोंकी लावणी समाप्तम् ॥





मेरा प्राण वसै प्रभु पात, रात नहीं निद्रा आवे  
 जी; मैं सुनी शास्त्रकी बात, गुरु एक मिल गये  
 नांसीजी; प्रभु दूर वसै परदेश, श्री सीमंधर  
 स्वामीजी ॥ १ ॥ मेरे ऐसे आवे दिल मांय,  
 अथी श्वासा चढवाउंजी; मैं करूं अजप्या  
 जाप, नासा पर दृष्टि जमाउंजी; मैं ढूं ढूं  
 प्रभुका देश, जैसे मैं प्रभुकूं पाऊं जी; मैं धरूं  
 अरिहंतका ध्यान, ध्यानते ज्ञान जगाऊं जी;  
 मैं कोई युक्तिके साथ, आपनो स्वरूप ध्याऊं  
 जी; मैं देखूं निज दीदार, और का ध्यान  
 मिटाऊं जी: मैं मनुष्य देहकूं पाय, कभी  
 नहीं अफल गमाऊंजी; मैंने कहे गुरु महाराज,  
 तोहंका ध्यान लगाऊंजी; मैं सुनी शास्त्रकी  
 बात, गुरु एक मिल गये नांसी जी: प्रभु दूर  
 वसै परदेश, श्री सीमंधर स्वामी जी ॥ २ ॥  
 नहीं गुरु का दोष, दीया मुज उत्तम ज्ञानेजी;  
 मन द्रवियां होगा ध्यान, मभी ये शास्त्र बख्शाणें



न थाई जी : मुनी रामचन्द्रकी जोड़, कला  
सबके मन भाई जी : में सुनी शास्त्रकी बात,  
गुरु एक मिल गये नामी जो; प्रभु दूर वसै  
परदेश : श्री सीमंधर स्वामी जी ॥ ४ ॥

॥ इति श्री सीमंधर स्वामीजी का स्तवन समाप्तम् ॥

—:ॐ:—

॥ अथ गुरु उपदेशी लिख्यते ॥



( ख्याली आयो मुलतानसें ॥ ए देशी )

पार न पायो गुरु ज्ञानको, भलो बतायो  
मारग जैनको ॥ पार० ॥ टेर ॥ दान सुपात्र  
मुनिकुं दीजो, पायो शालिभद्र फल दान को  
॥ पा० ॥ १ ॥ शील रख जनन करी रखो,  
ज्युं सुधरे धांगे मानखो ॥ पा० ॥ २ ॥ नप  
विना नहीं मोक्ष मिलत है, नष्ट करे कर्म





टेर ॥ धन कमायो अकृन करो, ओ तो खाया  
 खरच्यो नाय ॥ ज्ञा० ॥ पुन्य संचीया पूरा हुवे  
 जद संचीया केम रहाय ॥ ज्ञा० ते० ॥ १ ॥  
 पुत्र कलत्र धन दाजीयो, ओ तो निकमो डोसो  
 खाय ॥ ज्ञा० ॥ कूण करे धारी चाकरी, धारो  
 डेरो पोलरे मांय ॥ ज्ञा० ते० ॥ २ ॥ मांगे  
 खावा खी खीचड़ी, बलि ताजी जलेवी सेव ॥  
 ज्ञा० ॥ लपटो पुरो नवि घाल ही, बलि पृड़ी न  
 घाले पलेव ॥ ज्ञा० ते० ॥ ३ ॥ टिण टिण करो  
 विन कामरा, थे तो मरो खावण रे काज ॥  
 ज्ञा० ॥ क्युं कान पचावो खावो देखनें, थारी  
 सुध वृध गई सव लाज ॥ ज्ञा० ते० ॥ ४ ॥ बहु  
 घेटा कष्टो ना करे, जरे डोसो भुरे मन मांय ॥  
 ज्ञा० ॥ मुनि राम ऋहे धम जो काया, तो क्युं  
 दुख देखे भव पाय ॥ ज्ञा० ते० ॥

। इति उपदेशी लावणी समान् ॥











अथ उपदेशी फटको लिख्यते । १६

है सो लोजियेजी, कांइ कहणा है सो केह  
॥ अ० ॥ ५ ॥ लाय लगी चहुं फेर सुं जी,  
कांइ मिल रही भालो भाल. मुनिराम कहै  
सहु काढजो जी, कांइ इण घरमें बहु माल  
॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ इति उपदेशी पद समाप्त ॥

—:ॐ:—

॥ अथ उपदेशी फटको लिख्यते ॥



( मत करना परतीत रांडकी मारा सेर,  
देगई टारा ए देशी )

चले न कितका जोर मीजाजी, होनहार  
होवे, मीजाजी होनहार होवे; जोशी सिद्ध  
मीये अर अवध, खड़ा खड़ा जोवे ॥ टेर ॥ जो  
जोशी जोतिपकू वग्ने, बात सच्ची दीते उनकू









एक कोड़ अस्ती लाख ; महाभारत आगे  
हुवो सरे, छे सूत्रनी साख रे ॥ मू० ॥ ३ ॥  
जादव कुलमें आयने सरे, कमला कीधो  
वास ; पुरी द्वारका सुर करी सरे, सब सोवन  
घर वास ; एक दिन ऐसो आवियो सरे,  
हुवो जादव केरो नासरे ; ॥ मु० ॥ ४ ॥ राय  
प्रदेशीरे होतो सरे, सूरी कंता नार ; इष्ट  
कांत वाल्ही घणी सरे, सूत्रमें अधिकार ;  
निज स्वारथ विन पापणी सरे, मारयो निज  
भरतार रे ॥ मू० ॥ ५ ॥ जुट्टल श्रावकने हुंती  
सरे, दइता तीसनें दोय ; अग्नि माहीं प्रजा-  
लीयो सरे, दया न आणी कोय ; माठी  
गतनी पाहुणी सरे, गई जमारो खोयर ॥ मू०  
॥ ६ ॥ ब्रह्मदत्त चकी तणी सरे, हुंती चूलणी  
मात, व्यभिचारण चूक गइ सरे, दीर्घ रायके  
साथ, घात विचारी पुत्रनी सरे, छे ए बहुली  
चातर ॥ मू० ॥ ७ ॥ सहस विद्या त्रिखंड धणी







अथ हित शिक्षाकी सज्जाय लिख्यते । ३१

---

॥ अथ हितशिक्षाकी सज्जाय लिख्यते ॥

---

( एक मुनिवर देख्या वनमें ॥ ए देशी )

आखर तेरे काम नहीं आइ. तूं जोवेनी  
आंख भुकाइ ॥ आ० ॥ टेर ॥ चुन चुन मटिया  
महल चुनाया, ऊंडी नौव लगाइ. आ० ॥ १ ॥  
नारी रूपा अप्सरा सरीखी, जोड़ी मिली मन  
चाइ ॥ आ० ॥ २ ॥ सोना रूपा हीरा मोती,  
म्होरांकी धेली चुनाइ ॥ आ० ॥ ३ ॥ मात  
पिता भ्राता सुत भग्नि. ज्ञाती न्यातीने  
मित्राइ ॥ आ० ॥ ४ ॥ वस्त्र भूषण वाहन  
बहुतेरे, और सहु ठकुराइ ॥ आ० ॥ ५ ॥  
मंत्र यंत्र ज्योतिषने वैद्यक. इलम और पंडिताइ  
॥ आ० ॥ ६ ॥ राज काज हार्थीने घोड़े, पल-  
टण और निपाइ ॥ आ० ॥ ७ ॥ दान शील  
तप भावना भावो. ए छे नाची कमाइ ॥ आ०  
॥ ८ ॥ धर्म ध्यान कर पर भव नाथो. जद लेखे









































दान दिओ इणभव परभव सुख लहे,  
जन्म जग अरु राग भय कुं मिटावे है ।  
एहि लालचन्द कहे दानफल जद (दश) लहे,  
अभेदान धर्मदान मुगति ले जावे है ॥ १६ ॥

धधारे—

५०

धर्म है महल मां है दया नन्द दान मां है,  
शील हु सन्तोष मां है विनय भूल धर्म है ।  
धर्म ही धी सुख लहे धर्म ही धी कर्म दहे,  
धर्म बिना दुख नहे पांथे आठुं कर्म है ।  
धर्म ही धी देवलोका धर्म ही धी मिले मोद,  
धर्म ही धी सर्व थोक मिटे मिथ्या भूत है ।  
एहि लालचन्द कहे धर्म सुख जद लहे,  
आठुं कर्म सुख दहे मिल होय प्रद है ॥ १७ ॥

ननारे—

५०

निमग्निक नमे एक मुगदान विनयगत,  
जातवान कुरुगुन नमे न



फफाके—

फ०

फूले मती तन धन जोवन ने देखी देखी,  
 फूले मती रूप रंग गंगो देखी गातकुं ।  
 फूले मती तातमात भ्रात पुत्र पोता देखी,  
 फूले मती सजन कुटुंब देखी साथ कुं ।  
 फूले मती डाढ़ी मंछ काली काली देखी देखी,  
 फूले मती राजाकी संगत करी वान कुं ।  
 चापि लालचंद कह फूल्या फूल घान लेवे,  
 फूल्या साधु देख निरदोष देह भान कुं ॥२२॥

घवाके

व०

वड़े वड़े जोध केही काल आगे ह र गये.  
 वड़े वड़े भूप गये नरक सभार ह ।  
 वड़े वड़े भूप केई निज नारा कल जगया.  
 वड़े वड़े भूप निज मान कान नारा ह ।  
 वड़े वड़े जोध केई नारा कल कल जगया.  
 वड़े वड़े जोध केई धर्म विन खुवारी हे ।



आचारज सर्व साधु तू कपू रितो खोवे है ।  
 अपि लालचंद कहे मनुष्य जनम लही,  
 दया धर्म किया बिना भव मांही रोवे है ॥२५॥

पयाके— य०

यही जीव करणी करीने जावे परभव,  
 जो जो जीव परभव मांहे सुख पावे है ।  
 योही जीव आरत रुद्रध्यान ध्याता मरे,  
 जो जो जीव तिर्यन्त्र नरकांमें जावे है ।  
 योही जीव धरम शुक्ल ध्यान ध्याता मरे,  
 जो जो जीव सुरनर शिवसुख पावे है ।  
 अपि लालचंद कहे ऐसा सुख जद लहे,  
 दान शील तप भाव शुद्ध मन ध्यावे है ॥२६॥

रगके— २०

गम गम रट गयो जग जीव गम कान,  
 उलम कर्पासुं सुख जग जग पायो है ।  
 गम जीव सोही गम रयो पट मांही,  
 गम अग्रिहंत होय केवलो कहगयो है ।







बुझाई, दब दीघो वन आग लगाई। भांग  
 चूना ईंट पचाई, अग्नि आरंभ कीया दुःखदाई  
 ॥ सीता० ॥ ६ ॥ कै मैं सुखकुं पवन दुलायो,  
 ग्रीष्मकाले अधिक सुहायो। पंखा प्रगट का  
 कपड़ा सुं, है हस्या मुख पर पनढा सुं ॥ सीता०  
 ॥ १० ॥ कै मैं बाडी बाग लगायां, काचा पाक  
 वनफल खायां। शाक समार सुकाया, आना  
 सूका सब छमकाया ॥ सीता० ॥ ११ ॥ कै मैं  
 खाया कंद कचालू, गाजर मूली रंगरतानू।  
 तरकारी सुं रसना राची, नाम कहो विवरानुं  
 बांची ॥ सीता० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

फलीयां फूलीयां फूलड़ां, फलकी जात अनंक।  
 शाकपान बहु भेद है, कंद नाम नहीं एक ॥१॥  
 मारो काथी कूजड़ा, इणके एहीज काम।  
 कुंग कुंग तरकारी तणां, कहि घतलाउं नाम  
 ॥ २ ॥ अभदय अधाणां मैं भख्यां, अनंतकाय





मन दया विन जोग जमायो ॥ सीता०  
 १॥ कै मैं कष्ट कीयो जश लाजे, रिद्धि  
 सिद्धि रमणी राजके काजे । पंचाग्नि तप  
 धा धारी, जलधारा फलफूल आहारी ॥  
 सीता० ॥ २॥ कै मैं राजा राज कमायो, जूलम  
 कियो नर जनम गमायो । हाकम हांसल  
 बहुत लगायो, दुःख दीनो अरु दंड भरायो ॥  
 सीता० ॥ ३ ॥ कै मैं कबहु नामकी जूमि,  
 आदर लोक करे पर भूमि । निमित्त कलामें  
 अकल उपावे, महुस्त दे मतलब बतलावे ॥  
 सीता० ॥ ४ ॥ कै मैं नाम हकीम धरायो,  
 अपराधी सबके मन भायो । वर प्राणीको  
 दरद न बुजे, लोभी कुं निज स्वारथ सुजे ॥  
 सीता० ॥ ५ ॥ कै मैं अन्नधन बहुत उपायो,  
 राप करी पर ताप सवायो । कोप कीयां  
 करणा कर खोई. मान वियां मय वान  
 विगोई ॥ सीता० ॥ ६ ॥ कै मैं मनन्दा करी





पराई, थांपण धर घर मांहि छीपाई । सत्य  
तिहुं तिहुं भवन भमावे, ए सबको तिर-  
दार कहावे ॥ सीता० ॥ ७ ॥ कै में रागां  
रास रचाया, द्वेष तणे वश वैर विसाया ।  
चाडी खाई चूगल कहायो, जिन चरचासुं  
चित्त न लगायो ॥ सीता० ॥ ८ ॥ पृथ्वी पाणी  
अग्नि समीरा, सात सात लाख कही जिन  
वीरा । लाख चोबीस कही वनराई, विति  
चौरिंदि छ लाख बताई ॥ सीता० ॥ ९ ॥  
देव नरक तिर्यंच सुणावे, चार चार लाख  
कही योनि जणावे । लाख चतुर्दश मनुष्य  
सुजाणो, एह चोरासी लाख बखाणा ॥ सीता०  
॥ १० ॥ कीणहीसे भी वैर न कीजे, सुख दुःख  
में आलोयण लीजे । अब कहुं स्थानक पाप  
अठारे, समकित धारी सर्व संभारे ॥ सीता०  
॥ ११ ॥ कै में हिंसा करी य कराई, जूठी  
बाणो बांच सुणाई । छानी लीनी वस्तु







पितृवार । नित्य दाजेने रवी तपेजी, हिवे  
 दीठा अणुमार । ए माना० ॥ २ ॥ मुनी  
 देखी भव सांभल्यो जी, मन बसीयोर  
 बैराग । हृदय धरीने उठिया जी लागी माना-  
 जीने पाय । ए जननी अनुमत दे मोरी  
 माय ॥ ३ ॥ तूं सुखमाल सुहामणोजी भोषो  
 संतागना भोग । यौवन बय पाली पड़े जव,  
 आदरजो तुम जोग । रे जाया तुजविन घ  
 डीरे लमात ॥ ४ ॥ पाव पलकगी खदर नही  
 ए माय, करे कालकोली माज ॥ काल  
 झलाख्यो भाडपडेजी, ज्युं तितरख बाज ।  
 ए माना गिरा माखिलीं जाय ॥ ५ ॥ रज  
 जडोत पर आंगणो जी, तूं मुंदर अवनार ।  
 मोटा कुलनी उग्नोजी बाईं लंडो निगार ।  
 रे जाया ॥ तु० । ६ ॥ बाढी गववाढी गविये  
 ए माय, गिराने गेरज धाय । ज्युं संतागनी  
 मंदराजी, देवतहां विल जाय । ए माना०



अथ पंचमा आराको स्तवन लिख्यते । ६७

---

मार । पंचमहाव्रत आदरथाजी, लीधो संजम-  
भार ॥ ए माता० ॥ १४ ॥ एक मासनी सलेख-  
णाजीं उपनो केवल ग्यान ॥ कर्म खपाय मुक्ते  
गयाजी, ज्यांरा लीजे नित प्रत नाम ॥ ए  
माता० ॥ १५ ॥

॥ इति प्रथम पुत्रको स्तवन समाप्तम् ॥



॥ अथ पंचमा आराको स्तवन लिख्यते ॥



पहिले पद अर्गिहंन जाली, ज्यांगे भजन  
करो भविष्यत प्राणी । ज्यांगे नामधर्का जय  
जय कारो, पुरो मुख नहीं आं पंचमे  
आंगे ॥ १ ॥ हिवे जीव पंचमे घला, कोई













पांच पांचसे निकल्या लार ॥ वं० ॥ ३ ॥  
 विगत स्वामीजी चौथा जाण भजन किया होय  
 अमर विमाण ॥ देव लोकासुं खरा भणकार ॥  
 वं० ॥ ४ ॥ स्वामी सुंदरमा वीरजीरे पाट,  
 जनम मरण सेवगरा काट ॥ मुजने आप तणो  
 आधार ॥ वं० ॥ ५ ॥ मंडी पुत्रने मोरीज पूत,  
 मुक्त जावणरा कीधा सूत ॥ श्रीवीधे त्यागा  
 पाप अडार ॥ वं० ॥ ६ ॥ अकंपितने अचलभूता  
 वीरजाने वचने रक्षा रता ॥ चवदे पुरवना  
 भंडार ॥ वं० ॥ ७ ॥ मेतारजने श्रीप्रभास, मोक्ष  
 नगरमें कीधो वास ॥ जपता हुवे जयजेयकार  
 ॥ वं० ॥ ८ ॥ ए इग्यारे ब्राह्मण जोत चम्मा-  
 लीसे निकल्या साथ ॥ ज्या कर दीनो खेवो-  
 पार ॥ वं० ॥ ९ ॥ इण नामें सहु आसा फलें,  
 दोषी दुसमण दूरे टले ॥ रिद्धिबिद्धि पामें सुख-  
 सार ॥ वं० ॥ १० ॥ इण नामें सब नाशे पाप,  
 नितरो जपीये भवियण जाप ॥ चित्त चांखे



चंद्रप्रभ आठमाजी, नोमां सुविधि विधिके  
दाता, दशमा शीतल तपंत मिटाता, ग्यारमां  
श्रेयांस शिव दिखलाता ॥ म्हे० ॥ २ ॥ वारमां  
वासुपूज्य भावे पूजियेजी, तेरमा विमल विमल  
करनारा, करे अनंत अंत कर मांरा, पनरमा  
धर्म धर्म दातारा ॥ म्हे० ॥ ३ ॥ नमो शांति  
करन जग सोलमांजी, सतरमां कुंधू नमूं शिर  
नामी, अठारमा अर नमूं शिवगांमी, वंदूं मल्लि-  
नाथ गुण धांमी ॥ म्हे० ॥ ४ ॥ चौसमा मुनि  
सुव्रत व्रत देत है जी, इक्कीसमा नमीनाथ हित  
करना, वंदूं नेमनाथके चरना, वंदूं पार्श्वनाथ  
दुख हरना, चौवीसमा वीर प्रभु सिमरना,  
आये राम तिहारे सरना ॥ म्हे० ॥ ५ ॥ अनंत  
चौवीसोने वंदसांजी, वंदूं वर्तमान जिनवीसो,  
वंदूं गणधर सकल जगीसो, नाऊं अहंत  
साधनें सीसो ॥ म्हे० ॥ ६ ॥

॥ इति चौदसो समाप्तम् ॥



हिनी लेई अठारा ॥ जो० ॥ ६ ॥ दिन ठारामें  
सब कट मूई, ज्युं लद गये ऊंठ कतारा ॥  
जो० ॥ १० ॥ मुनि राम कहे कोई धन  
जोवनको, कोई गर्व न करियो प्यारा ॥  
जो० ॥ ११ ॥

॥ इति ११ ऊधोजी कर्मनकी गत न्यारी समाप्तम् ॥

—:ॐ:—

## ॥ होरी ॥

१ परदेशी रो कांई पतियारो ॥ ऐदेशी ॥

भूठा वोलो वचनको पोलो, नहीं वचनको  
बंध लिगारो ; हाथो ताली कही नट जावे,  
धिक् धिक् नास जमारो, बांधे बहु पापको  
भारो : भूठा वोलाको कांई पतियारो, सदा  
तुम भूठ निवारो ॥ भू० ॥ १ ॥ क्रोध १ मान  
२ माया ३ लोभसे ४ बाले, राग ५ रु द्वेष  
६ विचारो : हास्य ७ भय ८ विकृथा ९









॥ ११ ॥ मन तो माया में लाग्यो, जोवन रह्यो  
तू जोय रे । साध संगत नहीं कीधी रे, भोला  
दुजो वय दी खोय रे ॥ मा० ॥ १२ ॥ जोवन  
गयो जरा जव आई, इन्द्रियां पड़ी धारी हीण  
रे । विध विधरी थारे वेदना व्यापी, काया  
धई धारी खीण रे ॥ मा० ॥ १३ ॥ कानां  
नहीं सुणीजे आख्यां नहीं सुभे थर थर कांपे  
काय रे । करतो करतो वात भूली जावे उतर  
दीधो नहीं जाय रे ॥ मा० ॥ १४ ॥ आख्यां  
में तो भले गीडज आवे, मूढ़े पड़े धारे लाल  
रे । दांत दाढ़ मुख सुं गिर पड्या, आया  
धोला बाल रे ॥ मा० ॥ १५ ॥ सल पड गया  
धारे सींगले शरीर में, पतलो पड गयो पेट  
रे ॥ होले होले दोरो चाले, पोहचे ठिकाने  
ठेट रे ॥ मा० ॥ १६ ॥ कुवड़ी काया धई रे  
धारी, कह्यो न भाने कोय रे । हाल हुकुम  
घर में नहीं चाले, रह्यो न ठे सामो जोय रे ॥



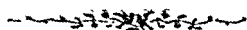
मा० ॥ २३ ॥ उत्तम कुल लही अवतारे,  
धर्म सुणो काढ़ो फंद रे । सुखे सुखे शिव-  
पुर में पहुँचे, इम भणो ऋषिराय चन्द रे ॥

मा० ॥ २४ ॥ वेयं पचीसी कीनी डिडवाणी,  
पूज्य जयमलजी रे परताप रे । समत अठारें  
वरसं इकिसे करो श्रीजिनजी रो जाप रे ॥  
मा० ॥ २५ ॥

॥ इति वेय पचीसी समाप्तम् ॥

—:—

॥ अथ धन्नाऋषि सिन्धाय ॥



श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अमियं समाणी  
मोरा नंदन । मनड़ें तो मानी रे नंदन ताहं  
रे ॥ १ ॥ तूं अतिहि बैरागी रे धन्ना, धरमनो  
रागी मोरा नंदन, माहरो तो मनड़ों रे किम  
परचावसुं ॥ २ ॥ दस दिस्ती दीसे रे धन्ना,



है कारण होंसा करे ।

१२१

ज्ञान प्रकाश दीखाया । नंद कहे चरणां में  
नमुं, श्रीशासन नायक मोक्ष सिधाया ॥ ६ ॥

॥ इति सर्वथा समानम् ॥



६ कारण होंसा करे ।



- १ जीतवार अर्थे होंसा करे,
- २ प्रशंसारे अर्थे होंसा करे,
- ३ मानरे अर्थे होंसा करे,
- ४ पुजाणरे अर्थे होंसा करे,
- ५ जनम-मरण-मुकाण-रे अर्थे होंसा करे,
- ६ दुख मीटाणरे अर्थे होंसा करे।

—०—



आठ प्रकार जीतनो दुर्लभ ।

१२३

८ प्रकार जीतनो दुर्लभ ।

—ॐ नमो भगवते वासुदेवाय—

- १ आठ करमामें मांहीनी कर्म जीतनो दुर्लभ,
- २ पांचु इन्द्रियांमें से रस इन्द्री जीतणी दुर्लभ,
- ३ जोग माहीं मनरो जोग जीतनु दुर्लभ,
- ४ पांच महाव्रत मांही चोथो महाव्रत जीतनु दुर्लभ,
- ५ छव काया माहीं वायु काया री जतना करनी दुर्लभ,
- ६ तरुण अवस्था में शील पालनु दुर्लभ,
- ७ छती शक्तिमें चमा करणी दुर्लभ,
- ८ छती जोगवाई में पांचु इन्द्रियां वस करणु दुर्लभ ।









- ८ धर्म सुणवो मुशकील,  
 ९ धर्म रे उपर श्रद्धा होणी मुशकील,  
 १० धर्म रे काममें पराक्रम फोड़नो मुशकील ।

—:०:—

## १० बोल दीक्षा आवे ।



- १ आपणो छन्दे आवे,  
 २ रिस करी लेवे,  
 ३ धन गया लेवे,  
 ४ सुपना देख्या लेवे,  
 ५ क्लेशसे लेवे,  
 ६ जाती स्मरण उपज्यासु लेवे (मृगापुत्रकी तरह)  
 ७ रोग उपज्या लेवे (अनाथी मुनीने परे )  
 ८ देवतां रे कहणसे लेवे ( धारो आउखो  
 धोड़ा ग्या )  
 ९ मोहरे बस लेवे ( भगु पागंहीतने परे )  
 १० लोकारे कहणसु लेवे ( तथा उपदेशसे लेवे )



## ॥ अथ त्रेसठ सलाका पुरुष सिंभाय ॥



चरण कमल मन धारं, त्रेसठ उत्तम नर  
अधिकारं । पभणिसू श्रुत अनुसार, जेहने  
'नाम लीचे निसतार' । आपण सफल हुवे अव-  
तारं, पांमी जै भव पारं ॥ १ ॥ ऋषभ अजित  
संभव अभि नन्दन, सुमति पदम प्रभु नयना  
नन्दन ससम तेम सुपासं, चन्द्र प्रभ सुविधि  
शीतल जिन, श्रेयांश वासु पूज्य जिन मुरमणि  
विमल गुण वासं ॥ १ ॥ अनन्त धर्म श्री शांति  
जिणेश्वर कुंधु नाथ अरमल्लि मुहंकर । मुनि  
सुव्रत नमि नेमि पार्श्व वोर ए जिन चौवीश ।  
जग वच्छल जग गुरु जगदीश, प्रणमी जै धरि  
प्रेमं ॥ २ ॥ ( ढाल प्रथम सुपन गज निरख्यौ  
( एदेशी ) प्रथमें भरत नरिंद वीजो सगर  
सुरिंद, मघवा तीजो उदार चौथो सनतकुमार ॥









## ॥ काली राणी से स्तवन लिख्यते ॥



काली राणी सफल कियो अवतार, पाम्यो  
 भवजल पार ॥ का० ॥ आकड़ी ॥ कोणक  
 राजाकी छोटी माता, धं शिक नृपत नार ।  
 वीर जिण्ड जीरो यांणी सुणीने, लीनो संयम  
 भार ॥ का० ॥ १ ॥ चन्द्रवाला जिता मिलीया  
 गुरनी जी नित्य २ चरण निवाय विनो करीने  
 भलीया अह इग्यारे निर्मल बुद्ध अवार  
 ॥ का० ॥ २ ॥ सुनन गुप्त शुद्ध संयम पाले  
 चढ़ा प्रहामा गी धार, वीर जिण्डजी आला  
 लेइने सांडा है तपन्या अवार ॥ का० ॥ ३ ॥  
 शरार सगत नान मन नर आगप्या गढ़वाली  
 तपना हार, वीर पर पाट मन्दन किन आठने  
 अह विन्तार ॥ का० ॥ ४ ॥ पाव वर नान  
 मान दाय दिन उला लायला इतना काल  
 धन महान्तिया जा नर अरायो जाने चदर











## ॥ ब्राह्मी सुन्दरी स्तवन लिख्यते ॥



ऋषभ राजारे राणीया दोय दुई, सेव  
 मंगलाने सेवानंदा जुई रे जुई दोनां रे दोय  
 पुत्री जाई, ब्राह्मी ने सुन्दरी दोनुं वाई ॥१॥  
 सतियां स्वार्थ सिद्ध सुं चोवीने आई, भले  
 भरत बाहुबल रे जोड़े जाई, ब्राह्मी रे हुवा  
 नानाएवे वीरा, जमणरा जाया अमोलख  
 हीरा, सुन्दरी रे एक जम्मण जायो, बाहु  
 बल जी कला बहोचर पायो पिछे, सेवा  
 नन्दारी कुख खुली काई, ब्राह्मीने सुन्दरी  
 दोनुं वाई ॥ २ ॥ भरत चक्रवर्तीरी पदवी  
 पाई, ब्राह्मीने सुंदरी दोनुं वाई, बाया वीनवे  
 बाबाजी आगे म्हाने बैरागरी बात बल्लभ  
 लागे म्हारे सुपने में मना करो सगाई ॥  
 ब्राह्मीने सुंदरी दोनुं वाई ॥ ३ ॥ में तो  
 केहरी नहीं बांजा, नामरायां रो नाम लिया

















रीभी तुं नाहीं. कृत घन लख उपगारे री  
काया ॥ अ० ॥ ५ ॥ जीव सुनो यह रीत  
अनादी, काहे कहत बार वारे । में न चलुंगी  
तो संग तेरे, पाप पुन्य दोय लारे री काया  
॥ अ० ॥ ६ ॥ जिनवर नाम सार भज आत्म,  
काया भ्रम संसारे । सुगुरु वचन परतीत  
धरत शुभ, आनन्द भये हैं हमारे री काया  
॥ अ० ॥ ७ ॥

॥ इति काया स्वाध्याय सिध्याय समाप्तम् ॥







चौरासी लाख पूरव आउ । अतिसे जिणजीरा  
 चोतीस ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जगन साधु जी धारे  
 सो कोड़ी, दश लाख जगन कवल ग्यानी । बांणी  
 रा गुण कया पैतीसो ॥ श्री० ॥ ७ ॥ तिथंकर  
 एकर मेरु लारे, ज्यारे साध साधवीया रो  
 परीवारो । ए तो मुक्ति जाती आठु कर्म पीसो  
 ॥ श्री० ॥ ८ ॥ बेहरमान बीसउ जाणी, ज्यारो  
 भजन करो उत्तम प्राणी । ज्यारे पूरे मन  
 रो जगीसो ॥ श्री० ॥ ९ ॥ शहर मेडतो शुभ  
 ठामो, रिपी जैमलजी किया धारा गुण ग्रामो  
 ॥ श्री० ॥ १० ॥

॥ इति बीस बेहरमान स्तवन समाप्तम् ॥





रे गुण हुवं तेतला, जिम रायण नोरे कोल ।  
सहज सुन्दर कहे तेहिज संपहो, म भणि स  
आद्यो रे घोल ॥ जी० ॥ ६ ॥

॥ इति षट्दशमोऽध्यायः समाप्तः ॥



॥ श्री जिन चोवीसी ॥



पद्मभोजनसंभव अभिनंदन, सुमन  
पद्म सुपास मन रंजन, चन्द्राग्रभु जिन देवो ।  
सुपथि नाथ शान्तल गुण गाडं, श्री ध्रुवांस  
वासुपथ मन प्याडं, विमल न निगमल सेवो ॥  
अनंत धरम श्री शान्ति जिनेश्वर, कुंभु नाथ  
अति हो अलपेसर, पांडु श्री अग्नाथो । मली  
नाथ सुनि सुद्वन नानी, नमीप नेम पार्थ हिन  
गामी, निलीपो सुप्रियो नाथो ॥ चौबीस  
सा श्रीवीर जिनेश्वर, पर उपगारी नानी श्री-



कितावें खोलता, अनागुना देख्या नहीं वेपारी  
हुवा तो क्या हुवा ॥ क० ॥ ४॥ माता पिता सुत  
बैन भाई और तिरिया जमाई है निज रूप आत्म  
के बिना बल्लभ हुवा तो क्या हुवा ॥ क० ॥ ५॥

॥ नवपद स्तवन प्रारम्भ ॥

सेवो सिद्ध चक्र भवि सुखकारी रे । नवपद  
महिमा जग भारी ॥ से० टेर ॥

कहे जोग असंख्य प्रकारारे; मुख्य नवपद  
मनमें धारा रे, होवे भविजन भवो दधि पारा  
॥ से० ॥ १ ॥ अरिहंत प्रथम पद जानो रे  
नहीं दोष अष्टादश मानो रे, प्रभु चार अनंत  
बखानो ॥ से० ॥ २ ॥ बीजेपद सिद्ध अनंतारे  
खपी कर्म हुवे भगवता रे, निज रूपमें रमण  
करंता ॥ से० ॥ ३ ॥ तीजे पद श्री सूरिराया रे  
पटतीत गुणे करो ठायारे पाले पंच आचा  
सवाया रे ॥ से० ॥ ४ ॥ चौधे पद पाठक सोहेरे



## ॥ अथ उपदेशी स्तवन प्रारम्भ ॥



ओ दुष्ट पिता डिकरी वेचि धन लेवा सुं  
जाय छै । समजो लीजे लक्ष्मी नहीं पण  
अंते तेतो लाय छै ॥ टेर ॥ अपाप धकी  
कीड़ा पड़से, छाती पर जम आवि चढ़से,  
धग धग ताखीला दावड़से ॥ ओ० १ ॥ वृद्ध  
संगसुं कन्या चोर चढि, जेव जन मिलीया अ  
गाड़ी, तुज कोमल छाती फाट पड़ी ॥ ओ० ॥ २ ॥  
मुड़दा साथे मीढल बांधी, मंडपमें रंडोपो साथी,  
सुं पाप पाख खाधो राधी ॥ ओ० ॥ ३ ॥ कुर्धधो  
क्या सूज्यो तुजने, दुखदरीयामें नोखी मुझने,  
रोयो सुं नहीं तुजने सुजने ॥ ओ० ॥ ४ ॥ सुं  
होथ पगे पड़ीया भागी, कन्या बिकरी बुद्धि  
जागी, ले पापो मृत्युने मांगी ॥ ओ० ॥ ५ ॥  
छ गाय अने डिकरि सरखो दूर त्या जय जूवे  
परखी, सुंवेचे छै हरखी २ दु० ६ ॥ धन आयो ते









मैं को धनो वाद ॥ वा० ॥ २३ ॥ सनन लोकों  
 को सनन सनन प्रकाशनी, जेहि सनन वादक  
 ॥ वा० ॥ २४ ॥ ओह सनन सनन लोकों वही नहीं  
 लोकों, लड़कने सनन ॥ वा० ॥ २५ ॥  
 दानों नहीं जेहि सनन सनन को धनो,  
 कनन वहीहि कि सनन ॥ वा० ॥ २६ ॥ सुंदर  
 जेहि दिन सनन, लोकों जेहि श्रेष्ठवती,  
 नरे लुटे जेहि सनन ॥ वा० ॥ २७ ॥ सुद सुद  
 को दिन सनन, किछु नही नही, जेहि लोकों  
 सनन ॥ वा० ॥ २८ ॥ सनन सुनने में नही को  
 सनन नही किछु, नही सनन नही दिन  
 सनन ॥ वा० ॥ २९ ॥

॥ ओह सनन को नही से सनन सनन ॥







अ

अआके, अजर अमर अविनाशी आविकारी ।  
 सिद्ध अरूपी अखंड मंड, अरागी अरोगी है ॥  
 अवेद अवेदी अविहेदी अकपाई ज्ञानी,  
 अलख अस्त्रय गुणि, असोगी अभोगी है ।  
 अकल अमल सुध, अचल अगम्य गम्य,  
 अलेसी अरागी जोगी, अजोणी अजोगी है ।  
 ऋषि लालचन्द कहे, केवल दंशण लहे,  
 सिद्ध हे अनंत ज्ञानी अनंत उप्योगी है ॥ ६ ॥

आ

आ आके, आछी करचां आछी होवैं,  
 आछी विन युंही खोवे, आछी करचा करणी  
 तो गरभ न आवैंगो । आछी दया आछो दान,  
 आछी सत्य आछो ज्ञान, आछो शील आछो  
 ध्यान, आछी चम्या लावैंगो । आछो विनो  
 आछो क्यात्त, आछो पोत्तो आछो वात्त, आछी  
 वाणी आछो भ्यात्त, मुगत्यांमे पावैंगो । ऋषि









सात ए छउ ऋतु माणें है ॥ रति माने ख्याल  
हु को तिक विषे भोग मांहिं, ऋतो खोवे नरभव  
धरम न जाणें है । ऋषिलालचंद कहे, सत्य  
सुख जद लहे, ऋतु छउ मांहि मन, धरमे ठाणें  
है ॥ १३ ॥

लृ

लृलृ के लिखत गणित कला, रूपगीत  
नाटकनी बहुत्तर कला । सीख्यो कारज न  
सरीयो । लिखत सूं लेख लिख्या, लाखां  
माल भेला कीना, लिखी भूठा आलदीना,  
अकारज करीयो । लिखत लिखाइ रह्या, लिख  
तन लारे लीया, चिदानंद चूक कीया, भुर  
भुर मरीयो । ऋषि लालचंद कहे, लिखत  
लिखाइ रहे, पाप कर्म साध गृहै, धन रहे  
धरीयो ॥ १४ ॥

लृ

लृ लृ के लिलड़ी लटक आई, तो भि

विवे सुख भाई, लीनी टेक छोड़े नाहीं, विवे-  
लप टायो है । मलीन रस मांहीं मलीन लट  
लोभी रहे, लिस रह्यो जैसे मूढ़ भोग मन  
भायो है । लीनो हट हटे नाहीं, मिथ्यामत  
मिटे नांही, लीली टेक मोड़े नांही, जनम  
गमायो है । अपिलाल चंद कहे, साची टेक  
जद रहे, साची सीता सती शील, जगत  
संरायो है ॥ १५ ॥

ए

एएक, एक घर हरख वधावो गाय  
रह्या गीत, एकघरे दुःखसोग, मच रह्यो भारी  
है । एकघरे पूत होवे, वाजा केई वाज रह्या,  
एक घर मौत होवां, लागे रात खारी है ।  
एक बैठो पालखी फिरत गजराज वाज, एक  
पड़्यो जंजीरा में, मार पड़े न्यारी है ।  
अपिलाल चंद कहे, पुन्य पाप फल लहे,  
पूरा सुख सिद्ध निरंजन निराकारी है ॥ १६ ॥









विद्वानसे श्ररदास, अल्प बुद्धि में वाल हूं ।  
 मत कीजो कोई हास, देख्यां वाच्यां सो लिख्या ॥६॥  
 जिन आज्ञा अनुसार, सूत्र अर्थ जाणु नहीं ।  
 लीजो सज्जन सुधार, भूल चूक दृष्टि पड़े ॥७॥  
 ऐसो अर्थ मतमान, सूत्रने लागे ठवक ।  
 तह मेव सत्य जान, प्रसिद्ध करता इम वीनवे ॥८॥  
 विक्रम संवत जान, उन्नीसे गुण्यासीमे ।  
 वार शुक्र वखान, माघ नवमी तिथी । ६ ।

॥ विविध रत्न स्तवन संग्रह द्वितीय भाग समाप्तम् ॥







चिट्ठी पत्री नीचे लिखे पतेसे करें—



और अपना ठिकाना ( पता ) नागरी  
( हिन्दी ) अंग्रेजी दोनों साफ २ अक्षरों  
में पूरा लिखें, ग्रामका नाम पोस्ट ऑफिस  
तथा जिला अङ्ग्रेजीमें साफ २ लिखें और  
ढाक खर्चके लिये टिकट चिट्ठीके साथ  
भेजें, जो किताब हमारे यहां स्टोकमें  
तैयार होगा तो भेजा जायगा अगर किसी  
को पहला पृष्ठना हो तो जवाबी पोस्टकार्ड  
लिखकर पूछ लेंगे ।

पुस्तक मिलनेका पता —

शगरचन्द मैरोंदान नंठिया.

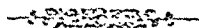
“श्री जैन ग्रन्थालय”

.....

व. कानेर. रा. नंदन.



चिट्ठी पत्री नीचे लिखे पतेसे करें—



और अपना ठिकाना ( पता ) नागरी  
( हिन्दी ) अंग्रेजी दोनों साफ २ अक्षरों  
में पूरा लिखें, ग्रामका नाम पोस्ट ऑफिस  
तथा जिला अङ्ग्रेजीमें साफ २ लिखें और  
डाक बर्चके लिये टिकट चिट्ठीके साथ  
भेजें, जो किनास हमारे यहां स्टेशन  
नेपाल होगा तो भेजा जायगा अगर किसी  
का पहला पत्ना हो ना जवाबो पान्टकार्ड  
लिखकर पत्र लेंगे ।

आपका प्रिय मित्र

श्री जैन ग्रन्थालय

"श्री जैन ग्रन्थालय"

वाराणसी, उत्तर प्रदेश

विद्वानसे अरदास, अल्प बुद्धि में बाल हूँ ।  
 मत कीजो कोई हास, देख्यां वाच्यां सो लिख्या ॥६॥  
 जिन आज्ञा अनुसार, सूत्र अर्थ जाणु नहीं ।  
 लीजो सजन सुधार, भूल चूक दृष्टि पड़े ॥७॥  
 ऐसो अर्थ मतमान, सूत्रने लागे ठवक ।  
 तह मेव सत्य जान, प्रसिद्ध करता इम बीनवे ॥८॥  
 विक्रम संवत जान, उन्नीसे गुणयासीमे ।  
 वार शुक्र वखान, माघ नवमी तिथी ॥ ९ ॥

॥ विविध रत्न स्तवन संप्रह द्वितीय भाग समाप्त ॥



लिखें पत्नी नाम लिखें पतेमें करें—



और अपना ठिकाना ( पता ) नागरी  
( हिन्दी ) अंग्रेजी दोनों साफ २ अक्षरों  
में पूरा लिखें, ग्रामका नाम पोस्ट ऑफिस  
तथा जिला अद्वारेजामें साफ २ लिखें और  
डाक त्खर्चके लिये टिकट चिट्ठीके साथ  
भेजें, जो किताब हमारे यहां स्टोकमें  
तैयार होगा तो भेजा जायगा अगर किसी  
को पहला पृच्छना हो तो जवाबी पोस्टकार्ड  
लिखकर पूछ लें ।

पुस्तक मिलनेका पता—

अगरचन्द भैरोंदान नंठिया.

"श्री जैन ग्रन्थालय"

मुद्रा ३० भाग्यचक्र

वीकानेर राजपूताना







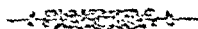
१७६ विविध रत्न स्तवन संग्रह ।

विद्वानमे अरदाग, अल्प बुद्धि में घात हुं ।  
मन कीजो कोई हाम, देख्यां पाच्यां सो निर्या ॥१॥  
जिन आज्ञा अनुसार, सूत्र अर्थ जाणू नहीं ।  
सीजो मजन सुधार, भूत चूक दृष्टि पड़े ॥२॥  
ऐसा अर्थ मतमान, सूत्रने लागे टयक ।  
तद् मेव सत्य जान, प्रसिद्ध करता इम योनरे ॥३॥  
विक्रम संवत्त जान, उद्योगे गुणयागीमे ।  
शार गृह्य धन्यान्, माघ नवमी तिथी ॥ ६ ॥

॥ विविध रत्न स्तवन संग्रह द्वितीय भाग समाप्त ॥



चिट्ठी पत्री नीचे लिखे पतेसे करें—



और अपना ठिकाना ( पता ) नागरी  
( हिन्दी ) अंग्रेजी दोनों साफ २ अच्छों  
में पूरा लिखें, ग्रामका नाम पोस्ट ऑफिस  
तथा जिला अङ्ग्रेजीमें साफ २ लिखें और  
डाक खर्चके लिये टिकट चिट्ठीके साथ  
भेजें, जो किताब हमारे यहां स्टॉकमें  
तैयार होगा तो भेजा जायगा अगर किसी  
को पहला पृष्ठना हो तो जवाबी पोस्टकार्ड  
लिखकर पृष्ठ लेंगे ।

पुस्तक सन्निवेश

अगरचन्द्र मेरीडान मेरवा.

"श्री जैन ग्रन्थालय"

दुर्गा अमरावती

बोकारने . गजपताना